PRGI no. UTTHIN/2021/80831

नवोदित प्रवाह

वर्ष- 05 अंक- 50 हिन्दी-साप्ताहिक देहरादून, बुधवार; 27 मई, 2026 मूल्य- 2 रु. वार्षिक शुल्क-100 रु. पृष्ठ- 4

फुलवारी के रजत जयंती समारोह में 'नवोदित प्रवाह' लोक संस्कृति विशेषांक पर विमर्श

प्रो. रामविनय सिंह, डॉ. सुधा पांडे, रजनीश त्रिवेदी और श्री अनिल रतूड़ी

डॉ. भारती मिश्रा

देहरादून। लोक-संस्कृति, साहित्य और संवेदनाओं का विराट संगम बना 'फुलवारी' का 25वां आयोजन- देहरादून की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना के केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके 'फुलवारी' में आयोजित मासिक साहित्यिक गोष्ठियां अब दून घाटी की बौद्धिक परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय बन चुकी हैं। पूर्व पुलिस महानिदेशक अनिल रतूड़ी तथा वर्तमान मुख्य सूचना आयुक्त राधा रतूड़ी के आवास पर आयोजित यह साहित्यिक श्रृंखला अपने रजत-जयंती पड़ाव पर पहुंची, जहां 25वीं परिचर्चा के रूप में प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका नवोदित प्रवाह के 'लोक संस्कृति विशेषांक' पर एक गंभीर, बहुआयामी और अत्यंत आत्मीय विमर्श आयोजित किया गया।

अब तक 'फुलवारी' के मंच पर अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकारों की पुस्तकों, काव्य-कृतियों और वैचारिक ग्रंथों पर चर्चाएं होती रही हैं, किंतु यह पहला अवसर था जब किसी साहित्यिक पत्रिका को केंद्र में रखकर इतने व्यापक स्तर पर विमर्श आयोजित किया गया। यही कारण रहा कि यह आयोजन अपने स्वरूप और विषय-वस्तु, दोनों दृष्टि से विशेष बन गया।

इस आयोजन की एक विशेष उपलब्धि यह भी रही कि 'फुलवारी' में पहली बार इस साहित्यिक विमर्श की कवरेज दूरदर्शन द्वारा की गई। इससे न केवल इस आयोजन की गरिमा और व्यापकता में वृद्धि हुई, बल्कि यह भी स्पष्ट हुआ कि 'फुलवारी' अब केवल स्थानीय साहित्यिक मंच न रहकर सांस्कृतिक और वैचारिक चेतना का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है।

'नवोदित प्रवाह' का यह विशेषांक केवल एक साहित्यिक पत्रिका नहीं, बल्कि भारतीय लोक-संस्कृति की विविध धाराओं का जीवंत दस्तावेज बनकर सामने आया। देश के अनेक राज्यों और शहरों से प्राप्त लोक-संस्कृति से जुड़े लेखों को हिंदी में अनूदित कर इस अंक में प्रकाशित किया गया है, जिससे भारतीय भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का एक व्यापक परिदृश्य निर्मित हुआ। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह भी रहा कि देहरादून के चौदह साहित्यकारों की रचनाओं और शोधपरक आलेखों को इस विशेषांक में स्थान दिया गया, जिसने स्थानीय साहित्यिक चेतना को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से जोड़ने का सार्थक कार्य किया।

कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि जिन साहित्यकारों के लेख इस विशेषांक में प्रकाशित हुए थे, उन्हें सर्वप्रथम अपने-अपने आलेखों, लोक-सांस्कृतिक अनुभवों और शोध-दृष्टि पर बोलने का अवसर प्रदान किया गया। इस आत्मीय और सहभागितापूर्ण संवाद ने गोष्ठी को केवल समीक्षा तक सीमित न रखकर उसे एक जीवंत सांस्कृतिक विमर्श का रूप दे दिया।

लोक-संस्कृति की विविध धाराओं पर प्रबुद्ध वक्तव्य

पंजाबी लोक-संगीत की माटी की महक

प्रसिद्ध गायिका कुलबीर चन्नी ने पंजाबी लोक-संगीत को जीवन की धड़कन बताते हुए कहा कि सरदार पूर्ण सिंह और अर्चना जी जैसे रचनाकारों ने इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि लोक-संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि पीढ़ियों की स्मृतियों और सामाजिक चेतना का जीवंत दस्तावेज होता है।

कुमाऊं के विवाह गीतों की सामाजिक चेतना- दून लाइब्रेरी एवं शोध केंद्र के कार्यक्रम अधिकारी चंद्रशेखर तिवारी ने कुमाऊंनी विवाह गीतों में निहित सामाजिक समरसता और लोक-जीवन की संवेदनशीलता पर प्रकाश डाला। उन्होंने 'सुवा रे सुवा...' जैसे गीतों के माध्यम से लोक परंपरा में निहित समावेशी चेतना को रेखांकित किया।

लोक-संस्कृति संरक्षण की पहल- वरिष्ठ साहित्यकार डॉली डबराल ने 'चौकी ढाणी' जैसे सांस्कृतिक केंद्रों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे प्रयास नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

झारखंड की जनजातीय संस्कृति में नारी सम्मान- डॉ. नूतन स्मृति ने 'कोरांवा' जनजाति का उल्लेख करते हुए बताया कि वहाँ आज भी अधिकांश सामाजिक निर्णय महिलाओं की सहभागिता से लिए जाते हैं।

कुमाऊँनी संस्कृति की वैश्विक पहचान- भारती पांडेय ने कहा कि कुमाऊँनी संस्कृति की पहचान देश-दुनिया तक पहुँची है, जहाँ वेद-मंत्रों की शास्त्रीयता और पारंपरिक 'पिछौड़ा' उसकी विशिष्ट पहचान हैं।

सुभाष पंत को श्रद्धांजलि और केंद्रीय पत्रिका की आवश्यकता

डॉ. भारती मिश्रा ने 'नवोदित प्रवाह' के माध्यम से दिवंगत साहित्यकार सुभाष पंत को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हिंदी साहित्य के लिए एक सशक्त केंद्रीय साहित्यिक पत्रिका की आवश्यकता पर बल दिया।

जौनसार-बावर की जीवंत संस्कृति- नवोदित लेखक सचिन चौहान ने महासू देवता, जाखड़े, बिस्सू पर्व और लाखामंडल के पांडव नृत्य का उल्लेख करते हुए जौनसार-बावर संस्कृति की जीवंतता को रेखांकित किया।

लोक मेलों की आत्मीयता- सत्यानंद बडोनी ने पर्वतीय अंचलों में लगने वाले 'कौथिगों' का सजीव चित्रण करते हुए मातृशक्ति की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

लोकगीतों में प्रकृति की करुणा- सुनीता चौहान ने जौनसार-बावर के लोकगीतों का

(शेष पृष्ठ 4 पर)

पंडित विद्यानिवास मिश्र की जन्मशती- संस्कृति जीवन से निकलकर ही आती है

डॉ. धर्मपाल सिंह

नई दिल्ली। 'मैं पंडित जी को 1984 से पढ़ता रहा हूँ और उन्हें सुनने के लिए लखनऊ, गोरखपुर, बस्ती जाता रहा हूँ।' 21 मई को दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में हिन्दी अकादमी द्वारा आयोजित 'सम्यक् भारतीयता के प्रतिनिधि रस-पुरुष पण्डित विद्यानिवास मिश्र' विषयक संगोष्ठी में मुझे भाग लेने का सुयोग प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र जी के सौजन्य से मिला।

संचालन करते हुए डॉ. कुमार अनुपम ने पंडित जी की अंतर्दृष्टि की चर्चा करते हुए कहा कि भारतीयता को ठीक से समझने के लिए पंडित जी को पढ़ना जरूरी है। पंडित जी लोक से जुड़े रहने वाले साहित्यकार थे।वे जितने पारम्परिक थे उतने ही आधुनिक भी। उनके अनुसार 'कला सम्पूर्णता को मापने का पैमाना है।' परम्परा कोई जड़ चीज नहीं है, बल्कि वह उत्तरोत्तर विकासमान है। पंडित जी को पढ़ना अपने धरातल से जुड़े रहना है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के प्रोफेसर सत्यकेतु सांकृत ने पंडित जी को गद्य में पद्य का लालित्य लाने वाला विशिष्ट साहित्यकार बताया। भारतीयता की आत्मा में पूरी सृष्टि के प्रति सम्मान का भाव है। पंडित जी का समग्र रचना-संसार इसी भावना से ओतप्रोत है। परम्परा और आधुनिकता के पारस्परिक सम्बन्ध का विश्लेषण करते हुए प्रोफेसर सत्यकेतु ने कहा कि जो परम है, वही परम्परा है। परम्परा में सातत्य तो है लेकिन आधिपत्य का भाव नहीं है।

प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली के व्यवस्थापक तथा पंडित जी द्वारा अगस्त 1995 में शुरू की गई पत्रिका 'साहित्य अमृत' के सम्पादक श्री प्रभातकुमार ने पंडित जी तथा श्री अटलबिहारी बाजपेई के प्रगाढ़ सम्बन्धों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज का समय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समय है और इस कार्य को गति देने में पण्डित जी के समग्र साहित्य का पठन-पाठन अनिवार्य है।

साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष तथा महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा की कुलपति प्रोफेसर कुमुद शर्मा ने पंडित जी से अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों की चर्चा करते हुए पंडित जी के उदात्त व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। जब पंडित जी 'साहित्य अमृत' पत्रिका के सम्पादक थे तो श्रीमती कुमुद शर्मा उपसम्पादक थीं। पंडित जी के साथ काम करते हुए उन्होंने पंडित जी के मृदुल स्वभाव का अनुभव किया। पंडित जी ने उनसे कहा कि वे उन्हें श्सॅरश न कहकर 'बाबूजी' कहा करें। यह उनके अपनेपन का नमूना है। संस्कृति जीवन से ही निकलकर आती है। पंडित जी दूरदर्शी थे और वे राम-कृष्ण को भूगोल का विषय नहीं मानते थे। वे मानते थे कि भारतीयता आन्दोलन नहीं करती है, वरन् वह स्वत्व का उत्सर्ग करती है। प्रोफेसर शर्मा के अनुसार पंडित जी हिन्दी के अंतिम योद्धा थे।

पंडित जी के जामाता तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के सेवानिवृत्त प्रोफेसर देवेन्द्र शुक्ल ने पंडित जी की सुरुचि-सम्पन्नता की चर्चा की। उन्होंने बताया कि पंडित जी भारतीय संस्कृति के अवमूल्यन के प्रति चिन्तित रहा करते थे। वे कहते थे कि हमारी सांस्कृतिक

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सम्पादकीय

बूंदों की झाड़ू से/झाड़ ले/ गर्मी का कूड़ा/ रे मेघ सांवरिया!/ फिर खुलकर / खिलने को हो रहा/ सोकर जागे शिशु सा/ जंगल का मन, / हल्की सी परस से/ टपक गया/ पके आक के पत्ते सा / बासीपन/ खेत की कलाई में /डाल दे/ फसलों का चूड़ा/ रे मेघ सँवरिया ।

डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी

आधुनिक हिन्दी व्यंग्य का कबीर

फिल्मों में कथा-पटकथा लेखन और साहित्यिक सृजन ये दोनों ध्रुव परस्पर अलग प्रतीत होते हैं पर वस्तुत: हैं नहीं। इन दोनों ही क्षेत्रों में सफलता की मानक ऊँचाइयों तक पहुँचने वाले विलक्षण व्यंग्यकार शरद जोशी को याद करना अर्थात भाव, भाषा और व्यंग्य को समग्र रूप में अनुभव करना है।

'अतिथि तुम कब जाओगे' यह फिल्म जिन्होंने देखी होगी उन्हें परेश रावल द्वारा अजय देवगन से पूछा गया सवाल याद होगा- क्या काम करते हो?

जी कहानियाँ लिखता हूँ

परेश रावल फिर पूछते हैं-

नहीं, मैंने पूछा काम क्या करते हो।

इसके निहितार्थ को सिद्ध करने वाले जोशी जी ने मात्र मानद लेखन ही नहीं किया उसे सम्मानजनक जीविका से भी जोड़ा। इस मिथक को तोड़ा कि हिंदी लेखक पर लक्ष्मी मेहरबान नहीं होती। उन्होंने इरफाना सिद्धिकी जी से विवाह कर कट्टर प्रथाओं को शीशा दिखा दिया।

उनका एक और प्रदेय बहुत ही चौंकाता है वह है कवि- सम्मेलनों में गद्य रचना का पाठ। ऐसा बहुत कम होता है कि कवि मंच पर कविता पढ़ें और व्यंग्यकार गद्य का पाठ करें। यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। उन्होंने गद्य की वाचिक परंपरा का प्रारंभ किया। जोशीजी ने फिल्में और टीवी के लिये संवाद और पटकथा लिखी। वो पद्मश्री से सम्मानित भी किए गए। छोटी सी बात, गोधूलि, साँच को आंच नहीं, क्षितिज और उत्सव, फिल्में तो- ये जो है जिंदगी, विक्रम और वेताल, सिंहासन बत्तीसी, वाह जनाब, देवी जी, प्याले में तूफान और दाने अनार के, ये दुनिया गजब की, इन धारावाहिकों का लेखन किया। जोशीजी को 'आधुनिक हिंदी व्यंग्य का कबीर' कहा जाता है। सीधा प्रहार तो सभी करते हैं पर हल्का-हल्का गुदगुदाते हुए लक्ष्य तक पहुँचाना केवल उन्हें आता है। पाठक आक्रोशित न होते हुए भी तिलमिला उठता है। राजनीति काजल की कोठरी है उसमें जो भी गया वह कालिख लेकर लौटा लेकिन उन्होंने राजनीति में न होते हुए भी राजनीति की हर दिशा दशा और पार्श्व का वर्णन किया और पाखंड /भ्रष्टाचार को दिन दहाड़े रोशनी में ले आए।

जीप पर सवार इल्लियां, परिक्रमा, किसी बहाने, रहा किनारे बैठ, दूसरी सतह, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, यथासंभव, जादू की सरकार, ये उनके व्यंग्य संग्रह हैं।

एक था गधा, अंधों का हाथी, तिलस्म... मुद्रिका रहस्य, नाटक और उपन्यास हैं। लॉकेट और लक्ष्य की रक्षा में उन्होंने करारा व्यंग्य किया है। जोशी जी भाषा को इस तरह बरतते थे कि अगला उसकी गहराई तक पहुँच जाए और उसके सारे प्रश्न निर्मूल हो जाएं। यह कौशल अद्वितीय है। उनकी संवाद शैली, वर्णनात्मकता विलक्षण है। निबंध, लेख, कथा, उपन्यास और नाटक भी लिखे उन्होंने।

आश्चर्य की बात यह है कि वर्तमान में जहाँ पर व्यंग्य में हास्य के निवेश को लेकर के जिस तरह से विमर्श चल रहा है या यूँ कहें कि विवाद चल रहा है उसे शरद जोशी जी के लेखन तक पहुँचकर समाप्त हो जाना है क्योंकि इतना सरस सरल मधुरतापूर्ण व्यंग्य अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी भाषा कटार सी तीक्ष्ण तो मुस्कान सी मनोरम है। शरद जोशी को पढ़कर ही जाना जा सकता है शाब्दिक चर्वण से नहीं। विषयानुरूप भाषा विन्यास उन्हें अन्य व्यंग्यकारों से अलग करता है।

नवभारत टाइम्स में उन्होंने प्रतिदिन कॉलम लिखा उनकी शैली चित्रात्मक थी वे 'आँखों देखी' लिखते रहे और दिखाते रहे।

'लेखक होना केवल शब्दों से खेलना नहीं होता बल्कि समाज की नब्ज पहचानकर उसे सच्चाई के आईने में दिखाना भी होता है- ये विजय नगरकर के उद्गार हैं।

व्यंग्य केवल कटाक्ष नहीं, गहन सामाजिक प्रतिक्रिया है, एक दायित्व है, जो समाज की अंदरूनी सड़न को बाहर लाता है, और उसी में उसके परिष्कार के या उसके निराकरण के संदर्भ छिपे होते हैं। उनकी भाषा में इंदौर की संस्कृति, बोली, शैली का पर्याप्त प्रभाव है। उनकी बेटी नेहा शरद जी कहती हैं- वही उनके लिए सबसे बेहतरीन श्रद्धांजलि होगी कि-

'पापा की लेखनी में केवल व्यंग्य नहीं था उनमें संवेदना थी, सजगता थी और सबसे बढ़कर इंसानियत थी।

प्रधानमंत्री मोदी के अनमोल रत्न, भारत के अद्वितीय पद्मश्री पुस्तक पर चर्चा

सुमन बाजपेयी

20 मई 2026 को दिल्ली स्थित आकाशवाणी भवन के प्रांगण में डॉ. दर्शनी प्रिया द्वारा लिखित पुस्तक, प्रधानमंत्री मोदी के अनमोल रत्न,भारत के अद्वितीय पद्मश्री, पर एक चर्चा का आयोजन किया गया।

चर्चा में साहित्य की विभिन्न विधाओं से जुड़े मनीषियों, साहित्य मर्मियों और शिक्षाविदों ने अपनी बात रखी। पुस्तक चर्चा में मुख्य रूप से डॉ. शोभा विजेंद्र सामाजिक कार्यकर्ता और लेखिका, प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा, वरिष्ठ भाषाविद, प्रोफेसर स्वर्ण सिंह, अंतरराष्ट्रीय संबंध केंद्र जेएनयू, वरिष्ठ भाषा अधिकारी राकेश यादव, वरिष्ठ कवि श्री नरेश शांडियाल एवं बेस्ट सेलर लेखक कमलेश कमल, हिंदी अकादमी के पूर्व उप सचिव श्री ऋषि कुमार शर्मा, कलाविद मालविका जोशी, वरिष्ठ कवयित्री अलका सिन्हा आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम में विशेष रूप से आकाशवाणी के उप सचिव जितेंद्र सिंह कटारा ने भी भाग लिया।

डॉ. शोभा विजेंद्र ने कहा कि यह पुस्तक न केवल सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक सांस्कृतिक दस्तावेज के रूप में काम करेगी। उन्होंने पढ़ने और साहित्य से जुड़े रहने के लाभों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि पुस्तकें तो कई लिखी गई हैं, पर राष्ट्र को समर्पित मौलिक काम से जुड़े लोगों को लेकर लिखी गई यह पुस्तक अपने आप में अनोखी है। यह जीवंत साक्षात्कार के जरिए परस्पर बातचीत के आधार पर लिखी गई है जो जीवन जीवन में श्रम और समर्पण, शील और तपस्या से जुड़कर किए गए कामों के परिणामों की याद दिलाती है। दूसरी ओर कला मर्मज्ञ और शिक्षाविद डॉ. मालविका जोशी ने पुस्तक के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा यह एक अनूठी पुस्तक है जो भारत के सांस्कृतिक गौरव का चलता फिरता आईना है। उन्होंने कहा कि पद्म सम्मान जैसे राष्ट्रीय सम्मान यदि उचित समय पर मिल जाए तो वह किसी भी व्यक्ति के लिए एक प्रेरणादाई तत्व के रूप में काम आ सकती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ भाषा विज्ञानी प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा ने पुस्तक की विशेषता पर बात करते हुए कहा यह लेखिका के अथक परिश्रम का परिणाम है कि पद्म सम्मान से जुड़े लोगों की जीवनी पर एक सुंदर पुस्तक बनकर तैयार हुई है। लेखिका ने देश के गांव-गांव, नगर नगर घूम कर वास्तविक कार्य करने वाले जन नायकों को एक पुस्तक में समेटा है जो आने वाली पीढियां के लिए एक दस्तावेज है। उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह की और भी किताबें भविष्य में आनी चाहिए। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कार्यक्रम में शामिल विशिष्ट अतिथि, बेस्ट सेलर लेखक एवं चर्चित भाषाविद, कमलेश कमल ने कहा कि पद्म सम्मान जैसा बड़ा सम्मान अब सामान्य लोगों तक अपनी पहुंच बना रहा है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि आने वाले समय में पुस्तक कलात्मक शीर्ष को छूएगी क्योंकि इसमें भारत के बेहतरीन जननायकों की सच्ची और असली कहानी है जो जीवन को प्रभावित करती हैं। जवाहरलाल नेहरू जेएनयू के प्रोफेसर स्वर्ण सिंह ने कहा की पुस्तक हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है और इस तरह के विषय पर पुस्तक लिखा जाना बहुत आवश्यक है क्योंकि साल 2014 के बाद जिस तरीके से पद्म पुरस्कारों का लोकतांत्रिक कारण हुआ है वह अभूतपूर्व है। ऐसे में राष्ट्र के असली नायको की कहानी जो पर्दे के पीछे थी जिन्हें प्रकाश मिलना आवश्यक था, वह पुस्तक के जरिए मिल गया है।

लेखिका और कवयित्री अलका सिन्हा ने कहा कि भारत के कलात्मक और साहित्यिक इतिहास को जब भी लिखा जाएगा तब इस पुस्तक को एक संदर्भ ग्रंथ के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। पुस्तक की शीर्षक की सार्थकता को देखते हुए इसे सत्ता की स्पष्ट पैरोकारी और युगांतरकारी बदलाव के रूप में देखा गया जिससे हाशिए पर पड़े लोगों को भी पद्म सम्मान तक पहुंच बनाने में आसानी हुई है।

नवोदित प्रवाह साप्ताहिक

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक : रजनीश कुमार त्रिवेदी

समाचार सम्पादक: रश्मि आलोक

संयुक्त सम्पादक(दिल्ली): डॉ. रेणु पंत

महाराष्ट्र प्रतिनिधि : इन्दिरा किसलय

इंदौर प्रतिनिधि : तृप्ति मिश्रा

उ.प्र. प्रतिनिधि : दीप्ति त्रिवेदी शर्मा

केरल प्रतिनिधि : अनुश्री पी

उदयपुर प्रतिनिधि : बसंत त्रिपाठी

वाराणसी प्रतिनिधि: चंद्रकांत चंद्रेश

मिर्जापुर प्रतिनिधि: माया चंद्रेश

राजधानी प्रतिनिधि: डॉ. भारती मिश्रा

भरतपुर प्रतिनिधि : मनमोहन अभिलाषी

विधि सलाहकार:डॉ. बैजनाथ, अधिवक्ता

नगर कार्यालय

42 इन्दर रोड, डालनवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड

कृपया लघु समीक्षा ही भेजें। लंबी समीक्षा प्रकाशित करने में हम असमर्थ हैं।

किसी भी रचना के प्रकाशन में कम से कम एक माह का समय लगता है, इसे ध्यान में रखें। -संपादक

(पृष्ठ 1 का शेष)

पंडित विद्यानिवास मिश्र की जन्मशती...

चेतना ने दुष्यंत की दी गई अँगूठी खो दी है। उनके अनुसार अतीत से जुड़ना पलायन का भाव नहीं है, बल्कि वह वर्तमान की संभावना का विस्तार है। पंडित जी का वर्तमान समाज के लिए यह संदेश है कि भारतीयता वर्तमानजीवी धर्म है। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात् मनोवैज्ञानिक व महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में कहा कि भारतीय चिन्तन समग्रता को केन्द्र में रखकर किया गया चिन्तन है। यह समस्त संसार परस्पर पूरकता एवं निर्भरता पर आधारित है। भारतीय दर्शन उपभोक्तावाद का खण्डन करता है। धर्म को समझने के लिए जीवन में सनातन की खोज करनी होगी। पंडित जी नदी, पर्वत, पशु-पक्षी, खेत-खलिहान की चर्चा अपने निबन्धों में करके यह साबित करना चाहते हैं कि एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं हो सकता। भोग की कोई सीमा नहीं है। हमें भोग की सीमा बनानी होगी। कोरोना-काल की चर्चा करते हुए प्रोफेसर मिश्र जी ने कहा कि उस समय में लोग परिस्थितिवश अपरिग्रही हो गए थे। उन्होंने कहा कि पंडित जी लोक और शास्त्र के बीच आवाजाही करने वाले साहित्यकार हैं। वे लोक को शास्त्र का प्रमाण मानते थे। उन्होंने बताया कि पंडित जी बहुत जल्दी में रहते थे जैसे कि वे न जाने कितने कार्य कर लेना चाहते थे। उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, अँगरेजी में ढेर सारा लेखन किया। प्रोफेसर मिश्र जी ने पण्डित जी की व्यंग्य रचनाओं 'भ्रमरानन्द के पत्र' और 'भ्रमरानन्द का पचड़ा' की चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने जनपदीय कविताओं का संकलन का काम भी शुरू किया था। उनके विचार का दायरा बहुत बड़ा था। प्रोफेसर मिश्र जी ने अपने व्याख्यान का अंत प्रसिद्ध उपन्यासकार शिवप्रसाद सिंह के श्भोर का आवाहनश में पंडित जी के व्यक्ति-चित्र को प्रस्तुत करने वाले गम्भीर व ललित शब्दावली को उद्धृत करते हुए किया। आभार ज्ञापन करते हुए हिन्दी अकादमी के सचिव श्री नागेन्द्र पति त्रिपाठी ने कहा कि वे पंडित विद्यानिवास मिश्र जी के कृतित्व को पाठकों को उपलब्ध कराने के लिए हरसंभव प्रयास करते रहेंगे।

समकालीन व्यंग्य समूह द्वारा "काव्य गोष्ठी" का आयोजन

समकालीन व्यंग्य समूह के तत्वावधान में आगामी 17 मई 2026 को ऑनलाइन माध्यम गूगल मीट पर एक विशेष "काव्य गोष्ठी" का आयोजन किया गया ।इस साहित्यिक आयोजन में देश के प्रतिष्ठित कवि एवं साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार दुर्गा सिन्हा उदार ने की।आयोजन का संयोजन एवं संचालन रामस्वरूप दीक्षित, डॉ. उपासना दीक्षित तथा आरती शर्मा द्वारा किया। इस अवसर पर आमंत्रित कवियों में रणविजय राव, डॉ. देवेंद्र तोमर, चन्द्र प्रकाश शर्मा, निधि अग्रवाल, लता अग्रवाल तथा विनीता राहुरिकर ने शामिल होकर नये रंग और नये क्लेवर की कविताएं प्रस्तुत की। सभी कवियों ने समकालीन सामाजिक विषयों, व्यंग्य और संवेदनाओं से जुड़ी अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को साहित्यिक आनंद ले सराबोर कर दिया। समकालीन व्यंग्य समूह ने साहित्य प्रेमियों, कवियों एवं युवा रचनाकारों से इस ऑनलाइन काव्य गोष्ठी से जोड़े रखा। समूह के प्रमुख रामस्वरूप दीक्षित के अनुसार अनुसार यह आयोजन साहित्यिक संवाद, अभिव्यक्ति और रचनात्मकता को नया मंच प्रदान करेगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ उपासना दीक्षित तथा आरती शर्मा ने किया। श्रोताओं में देश-विदेश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों में मेधा झा, मुजफ्फर सिद्दीकी, एस पी सिंह ,मधुर कुलश्रेष्ठ, भंवरलाल, नीलिमा करैया, नीलम , रानी मोटवानी, शोभा, प्रेमरंजन, गोपेन्द्र आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

रत्ना भदौरिया

रेत में खोती नदी

कितनी बार
मैंने अपने अंतर्मन की गहराइयों में उतरकर
तुम्हें फिर से गढ़ने की कोशिश की थी-
जैसे कोई मूर्तिकार
टूटे हुए पत्थर में भी
एक संपूर्ण आकृति खोज लेता है
तुम्हारे भीतर फैले अँधेरे को
मैंने अपने हिस्से की रोशनी से भरना चाहा
तुम्हारी थकी हुई आत्मा के पास
मैंने अपना मौन रख दिया था
कि शायद
तुम्हें किसी शब्द से अधिक
एक सच्ची उपस्थिति की आवश्यकता हो
पर तुम-
हर बार
मेरे हाथों की ऊष्मा से छिटककर
एक डरी हुई चिड़िया की तरह
उड़ जाते रहे
तुम्हें लगता रहा
कि प्रेम
तुम्हारी स्वतंत्रता छीन लेगा
जबकि मैं तो
तुम्हारे लिए
आकाश बचाए रखना चाहता था
मैंने कभी तुम्हें बाँधना नहीं चाहा
प्रेम को अधिकार में बदल देना
मेरी प्रकृति नहीं थी
इसलिए
जब तुम्हारे भीतर की बेचैनी
हमारे संबंध की दीवारों से टकराने लगी
मैंने तुम्हें
नदी की तरह बह जाने दिया
सोचा था-
नदियाँ लौटती नहीं सही
पर वे
अपने बहाव में
एक दिन
स्वयं को पहचान लेती हैं
मैं किनारे की तरह
स्थिर खड़ा रहा
और तुम
धाराओं में उलझते गए
धीरे-धीरे
हमारे बीच संवाद कम हुआ
फिर शब्द कम हुए
फिर प्रश्न भी समाप्त हो गए
और अंततः
एक ऐसी चुप्पी जन्मी
जिसमें केवल दूरी की आवाज सुनाई देती थी
तुम शायद समझ ही नहीं पाए
कि किसी को प्रेम करना
सिर्फ उसके साथ रहना नहीं होता
कभी-कभी
उसके टूटे हुए हिस्सों को
अपनी आत्मा में जगह देना भी होता है
मैंने तुम्हारे भीतर के तूफानों को
अपनी छाती पर सहा था
तुम्हारे क्रोध को
अपनी शांति में समेटा था
तुम्हारी असुरक्षाओं को
अपने विश्वास से ढकने की कोशिश की थी
पर कुछ लोग
प्रेम मिलने पर भी
उस पर विश्वास नहीं कर पाते
वे हर निकटता में
एक संभावित विछोह देख लेते हैं
और फिर
धीरे-धीरे
वे उसी चीज को नष्ट कर देते हैं
जिसकी उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता होती है
तुम भी शायद
उसी भय के कैदी थे
मैंने तुम्हें समझने में
अपनी पूरी संवेदना लगा दी
पर संवेदनाएँ भी
हर युद्ध नहीं जीततीं
कुछ दूरियाँ
गलतफहमियों से नहीं
अधूरे आत्म-संघर्षों से जन्म लेती हैं
और वे इतनी गहरी होती हैं
कि दो प्रेम करने वाले लोग भी
उन्हें पार नहीं कर पाते
अब
जब रात बहुत शांत होती है
और स्मृतियाँ
धीरे-धीरे मन के दरवाजे खोलती हैं
मैं सोचता हूँ-
क्या सचमुच
हमारा प्रेम कम था?
या फिर
हम दोनों ही
अपने-अपने भय के इतने अभ्यस्त थे
कि प्रेम को भी
एक सुरक्षित ठिकाना नहीं बनने दिया?
तुम्हारे जाने के बाद
मैंने यह जाना
कि हर बिछड़ना
घृणा से नहीं होता
कुछ संबंध
धीरे-धीरे इसलिए मर जाते हैं
क्योंकि एक व्यक्ति
लगातार आत्मा से पुकारता रहता है
और दूसरा
अपने भीतर के शोर से बाहर ही नहीं आ पाता
अब भी
मेरे भीतर
तुम्हारे लिए कोई क्रोध नहीं है-
सिर्फ एक शांत उदासी है
ठीक वैसी
जैसे कोई नदी
समुद्र तक पहुँचने से पहले
रेत में सो गई हो

रायबरेली उत्तर प्रदेश

जयपाल

पृथ्वी

यह पृथ्वी
किसी शेषनाग के सिर पर नहीं
नंदी बैल के सींगों पर भी नहीं
स्त्री के हाथों पर टिकी हुई है

पृथ्वी और स्त्री

पृथ्वी
जब तक स्त्री के हाथों में रहेगी
सुरक्षित रहेगी
पुरुष के हाथ तो खून से रंगे हैं

विस्थापित बहनें

बहने विस्थापित कर दी गई
कहा गया उनकी शादी हो गई है
विस्थापन का दर्द दिल में दबाये
उन्होंने बसाए घर-परिवार
गांव-नगर-बस्तियां
ताकि विस्थापित न रहे कोई दुनिया में

112- **ए न्यू प्रताप नगर**
अंबाला शहर (हरियाणा)
मो.-9466610508

गणेश प्रसाद गम्भीर

आदमी की शक्ल वाले भेड़िए

आदमी की शक्ल वाले भेड़िए
शहर में जिंदा हैं आखिर किसलिए।

चींथते अस्मत किसी मासूम की
मोमबत्ती थामकर बस रोइए।

गंदगी को साफ करिए बेहिचक
और अपने हाथ जल से धोइए।

जो जहर के वृक्ष कल के दिन बने
बीज ऐसे भूमि में मत बोइए।

घुस गए हैं हर गली में भेड़िए
तान कर चादर न लंबी सोइए।

अक्ल पर पत्थर पड़े अब भी अगर
आंख मलिए और दीदा खोइए।

जिनको पाला खूब नाजोअदा से
उनकी अर्थी बेवजह मत ढोइए।

अरविंद 'कुमारसम्भव'

गांव की एक गर्म दोपहर

अमिया की छांव
कौवे की गर्म कांव

भैंस गई पोखर में
चारा रखा बाखर में

नीम पर निंबोली
छोरी करे ठिठोली

गांव बाहर अमराई
होलै से चली पुरवाई

छोटी कच्ची अमिया
ढ़ेले मारे उन्हें छमिया

नमक लगाकर खाओ
माली आये भाग जाओ

पनघट पर हमजोली
मिलकर करें बतौली

खाती की खतवाड़
भड़भूजे का वो भाड़

झाड़ी में चरती बकरी
उछली नन्ही गिलहरी

पीपल तले बैठी गाय
सूखा चारा नहीं भाय

बच्चों की अब है छुट्टी
इमली खा रहे हैं खट्टी

भभूल्ये में उड़ रही रेत
बंजर पड़े हैं सारे खेत

प्याज टमाटर और खीरे
बिक रहे मीठे ये मतीरे

दोपहर में छाछ राबड़ी
बांस से बनाई छाबड़ी

धूप में सूखी कैर सांगरी
मोची बनाए जूती नागरी

लुहार की धौंकनी भक
कोल्हू बैल घूम रहा टक

पंसारी की छोटी दुकान
उसमें थोड़ा सा सामान

बर्फ के मीठे रंगीन गोले
बेच रहा लंगड़ा रामबोले

बड़ के नीचे की चौपाल
ताश खेल रहे मस्त हाल

गांव की ओ मस्त दोपहरी
फिर याद आये तू मनोहरी

जयपुर

प्रोमिला पुन्नू भारद्वाज

शोधक यन्त्र

पर्वत की चोटी पर
शुद्ध शीतल हवा मिली,
गहरी साँसें लीं
पीये कुछ घूँट
पवित्र पवन के,
रोम-रोम में हुई कम्पन
पीते ही पावन पवन,
कर के आई होगी
चारों धामों के मन्दिर,
मक्का-मदीना, गिरिजाघर,
गुरुद्वारे सारे
और उनमें विराजमान,
आलौकिक नूर,
विचार शून्य हो
हथेलियों के प्याले बना-बना
ऊँडेले तन में,
पवित्र पवन के
अनगिनित प्याले भर-भर,
चक्षु मूँद कर,
होता गया शुद्धिकरण,
सारे का सारा,
शहरीकरण से उपजा प्रदूषण
सांसारिकता से उपजे दुर्भाव
रचे बसे भीतर बाहर,
धुलते गए धीरे-धीरे
घुलती गई जैसे-जैसे
अंग-अंग में
पावन पवन,
छुए होंगे जिसने बदन
संतों-महात्माओं के
लामाओं-पादरियों के,
मौलवियों-ज्ञानियों के,
निःसंदेह निंभय हो के
अदृश्य है रोक-टोक से परे.
छुए होंगे सब के चरण,
स्पर्श मात्र से
स्पंदित हुआ अंग-अंग,
भीतर प्रवेश करते ही
होने लगा शुद्धिकरण
शारीरिक, मानसिक, आत्मिक,
तन बन गया
शोधक यन्त्र-
यन्त्रवत स्थिर
खड़ा ही रहे गर
पर्वत की चोटी पर,
होगा बेहतर,
उसके लिये
और सब के लिए,
दुनिया में फैले
वैर वैमन्सय भरे विकार
शोधन यन्त्र रूपी तन में,
आते रहें
शुद्ध हो जाते रहें,
पवित्र पवन से
स्पर्श कर-कर,
पवन सम तन
बना रहे
सर्वव्यापी शोधक का यन्त्र,
बन शोधन का माध्यम
करता रहे शुद्धिकरण,
अन्दरूनी व बाहरी
सदैव निरन्तर।

शिमला हिमाचल प्रदेश

लघुकथा

अनिता रश्मि

बोझ

बहुत निर्धन था वह। किसी तरह बेटे का इलाज सरकारी अस्पताल में करा रहा था। कुछ दवाइयाँ बाहर से भी लानी पड़ रही थीं।

बेटा ठीक नहीं हो सका। उसकी साँसें आज शाम थम गईं।

सबके कहने पर वह एबुलेंस का इंतजार करने लगा। भाड़े का शव-वाहन लेने की क्षमता नहीं थी।

काफी चिरौरी करने के बाद भी एबुलेंस उपलब्ध नहीं कराई गई। एक एबुलेंस उसके गाँव के रास्ते पर आधी दूर तक जानेवाली थी, लेकिन उसके चालक ने भी इनकार कर दिया,

'आगे ही इस पर बहुत लोग हैं। दो-दो शव को एक साथ लेकर उतनी दूर उबड़-खाबड़ रास्ते पर जाना है। और बोझ नहीं ले सकते हैं।'

चालक ने फिर चुपके से एबुलेंस आगे बढ़ा दी।

बात पूरी होने से पहले ही ग्रामीण ने कफन में लिपटे बेटे के शव को कंधे पर उठा लिया।

बुदबुदाया,

'बाप के कंधे पर बेटे की लाश से बड़ा बोझ है कोई?'

राँची

लघुकथा

मधूलिका श्रीवास्तव

आखिरी कॉल

रामलाल जी कई दिनों से बेटे को फोन कर रहे थे।कभी वह फोन नहीं उठाता या फोन उठाता भी तो कहता,
"मीटिंग में हूँ पापा, बाद में बात करता हूँ।"
पर कभी पलटकर फोन नहीं करता।
रामलाल जी निराशा में डूबे रहते।
एक रात लगातार भारत से फोन आ रहे थे। खीज कर बेटे ने कपड़े बदलते हुए फोन का स्पीकर ऑन कर दिया ।
वहां से आवाज आई "सिटी अस्पताल मुंबई से कॉल कर रहे हैं।
आपके पिता बार-बार आपका नाम ले रहे थे"
सुन कर बेटे ने घबराकर कहा
"बात कराइए!"
उधर से आवाज आई-
"अब नहीं हो सकती अभी-अभी वे शांत हो गए हैं।"

E-101/17 **शिवाजी नगर**
भोपाल म.प्र. (462016)
उवइ. 9425007686

(पृष्ठ 1 का शेष)

फुलवारी के रजत जयंती समारोह में 'नवोदित प्रवाह' लोक संस्कृति विशेषांक पर विमर्श

डॉली डबराल

चन्द्रशेखर तिवारी

डॉ. नूतन स्मृति

श्रद्धा बक्शी

भारती पाण्डे

डॉ. भारती मिश्रा

सरोजिनी नौटियाल

सुनीता चौहान

सत्यानन्द बडोनी

कुलबीर चन्नी

सचिन चौहान

सोमेश्वर पाण्डेय

भावपूर्ण प्रस्तुतीकरण करते हुए बदलते समय में लुप्त होती लोक-संस्कृति पर चिंता व्यक्त की।

पंजाब की ऊर्जा और लोक उल्लास- सोमेश्वर पांडे ने पंजाब के लोक-जीवन, सरसों के खेतों और 'शावा-शावा, बल्ले-बल्ले' की संस्कृति का संस्मरणात्मक वर्णन किया।

संस्कृति एक असीम समुद्र है- सरोजिनी नौटियाल ने कहा कि संस्कृति कोई बंद परिभाषा नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन-शैली का विराट स्वरूप है।

श्रद्धा मिश्रा बक्शी ने अपने पारिवारिक साहित्यिक संस्कारों और बैरिस्टर मुकंदी लाल से जुड़ी स्मृतियों को साझा करते हुए मोला राम तोमर की चित्रशैली पर विस्तार से विचार रखे।

संपादकीय विमर्श: लोक-संस्कृति और साहित्यिक पत्रिकाओं की भूमिका

लेखकों के वक्तव्यों के उपरांत पत्रिका के प्रधान संपादक रजनीश त्रिवेदी, परामर्श संपादक एवं पूर्व कुलपति प्रो. सुधारानी पांडेय, पूर्व डीजीपी अनिल रतूड़ी तथा संस्कृत के विद्वान प्रो राम विनय सिंह ने पत्रिका की वैचारिक दृष्टि, लोक-संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता, भारतीय भाषाओं की समृद्ध परंपरा और साहित्यिक पत्रिकाओं की वर्तमान स्थिति पर गंभीर एवं सारगर्भित चर्चा की। इस विमर्श ने स्पष्ट किया कि 'नवोदित प्रवाह' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि भारतीय लोक-संवेदना और सांस्कृतिक स्मृतियों को संरक्षित करने का एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक अभियान है।

"यह केवल पत्रिका नहीं, सांस्कृतिक संजीवनी है"- प्रो. सुधारानी पांडेय

डॉ. सुधारानी पांडेय ने अपने उद्बोधन में कहा- "आज के संक्रमणकाल में जब 'धर्मयुग' और 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' जैसी कालजयी पत्रिकाएँ इतिहास का हिस्सा बन चुकी हैं और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का संसार निरंतर सिमट रहा है, ऐसे समय में 'नवोदित प्रवाह' का यह प्रयास किसी संजीवनी से कम नहीं है। उन्होंने 'नवोदित प्रवाह' के लोक संस्कृति विशेषांक को "भागीरथ प्रयास" की संज्ञा देते हुए कहा कि कश्मीर से कन्याकुमारी, झारखंड से उत्तराखंड और उड़ीसा से गढ़वाल-कुमाऊं तक की विविध लोक-सांस्कृतिक धरोहरों को एक सूत्र में पिरोना अत्यंत कठिन किंतु ऐतिहासिक कार्य है।

नवोदित प्रवाह 'वार्षिक पहल' लोक संस्कृति अंक पर फुलवारी में चर्चा सर्वथा प्रासंगिक रूप में विद्वान लेखकों के विद्वतापूर्ण वक्तव्य के साथ सार्थक चर्चा को दिशा देने में समर्थ कही जा सकती है।

उलझी संवेदनाओं और कुंठा संत्रास भरे समय में साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का अभाव निश्चित ही प्रश्न चिन्ह के साथ बहुत कुछ सोचने को विवश करता है। धर्मयुग, साप्ताहिकहिंदुस्तान, कादंबिनी, ज्ञानोदय जैसी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का बंद होना और ई. पत्रिकाओं के युग में एक सुंदर मुद्रित विशेषांक 'नवोदित प्रवाह ' का नियमित प्रकाशन निश्चित रूप से स्वागत योग्य पहल है। पत्रिका का यह चौथा वार्षिक अंक लोक संस्कृति विशेषांक भारतीय भाषाओ और संस्कृति झलक प्रस्तुत करने के साथ देश भर के वरेण्य साहित्यकारों सहित युवा कलमकारों की रचनाओं से समृद्ध हुआ है। वाचिक परंपरा से समृद्ध लोक जीवन और लोक संस्कृति जीवन का वह वटवृक्ष है, जिसकी छाया में ही साहित्य और शास्त्र का संसार पनपता है संस्कृत से लेकर समस्त भारतीय भाषाओ, बोलियों में लोक ही समाया है।

'लोक संस्कृति' और भाषाओं में समाहित इस अद्भुत धारा को सतत प्रवहमान रूप में प्रस्तुत नवोदित प्रवाह के प्रधान संपादक और पत्रिका के सभी सहयोगी अभिनंदन के पात्र हैं।

'फुलवारी': साहित्यिक आत्मीयता का जीवंत तीर्थ।

निरंतर प्रत्येक माह किसी न किसी साहित्यिक कृति पर गंभीर विमर्श आयोजित कर रही 'फुलवारी' अब दून घाटी के साहित्यिक जीवन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुकी है। यह आयोजन उसी श्रृंखला की 25वीं कड़ी थी, जिसने इसे विशेष ऐतिहासिक महत्व प्रदान किया। इस अवसर पर मुख्य सूचना आयुक्त राधा रतूड़ी की आत्मीय आवभगत, गरिमामयी मुस्कान और विनम्र व्यवहार ने उपस्थित सभी साहित्यकारों और अतिथियों का मन मोह लिया। उनके व्यक्तित्व की सहज ऊष्मा और आत्मीयता ने पूरे आयोजन को पारिवारिक आत्मीयता से भर दिया। साहित्य और संस्कृति के प्रति उनका सम्मानभाव तथा प्रत्येक अतिथि के प्रति उनका स्नेहपूर्ण व्यवहार पूरे समारोह में विशेष रूप से अनुभव किया गया।

इस अवसर पर देहरादून के अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकारों की उपस्थिति ने भी समारोह की गरिमा को और अधिक बढ़ाया। डॉ. सुशील उपाध्याय, अनिल भारती, पद्मा मिश्रा, शिवमोहन सिंह, शीशपाल गुसाईं, ले. जनरल ए.के. बक्शी, सुधा जुगरान, मंजु काला, रश्मि त्रिवेदी सुनील त्रिवेदी, क्षमा कौशिक, माहेश्वरी कनेरी, मोनिका पांडे सहित अनेक साहित्यप्रेमियों की उपस्थिति ने इस साहित्यिक आयोजन को और अधिक गरिमामय बना दिया।

साहित्यिक चेतना का अविरल प्रवाह

'फुलवारी' की यह शाम केवल एक पत्रिका-विमर्श भर नहीं थी। यह भारतीय लोक-संस्कृति, साहित्य और संवेदनाओं की उन धाराओं का संगम थी, जो आज भी समाज की आत्मा को जीवित रखे हुए हैं। जिस प्रकार अनेक नदियाँ मिलकर समुद्र का विस्तार करती हैं, उसी प्रकार इस गोष्ठी में उपस्थित विविध अंचलों की सांस्कृतिक चेतनाएँ एक व्यापक भारतीयता में समाहित होती दिखाई दीं।

'नवोदित प्रवाह' का यह विशेषांक वास्तव में भारतीय लोक-संस्कृति का ऐसा जीवंत गुलदस्ता बनकर सामने आया, जिसकी सुगंध आने वाली पीढ़ियों तक अपनी माटी की स्मृति पहुँचाती रहेगी।

लोक सेवा आयोग की रजत जयंती

हरिद्वार। उत्तराखंड राज्य लोक सेवा आयोग के 25 वर्ष पूर्ण होने पर दिनांक 15 मई 2026 को लोक सेवा आयोग परिसर में रजत जयंती समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री के आर्य मुख्य अतिथि के रूप में और आयोग की प्रथम संस्थापक महिला सदस्य डॉक्टर सुधा रानी पांडेय विशिष्ट अतिथि के रुप में आमंत्रित की गई थीं। आयोग के सभी पूर्व अध्यक्ष एवं सदस्यों की भी उपस्थिति ने समारोह की गरिमा वृद्धि की। अध्यक्ष डॉक्टर रविदत्त गोदियाल सहित आयोग के सभी सदस्य, सचिव कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि सहित सभी उपस्थित अध्यक्षों और सदस्यों ने अपने कार्यकाल के अनुभव साझा किए। अध्यक्ष डॉक्टर रविदत्त गोदियाल नें अभ्यागत अतिथियों के स्वागत सम्मान सहित आयोग की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आयोग के पच्चीस वर्षों की यात्रा के विवरण संबंधित स्मारिका भी लोकार्पित की ओर डिजिटल एप भी मंचासीन अतिथियों द्वारा लांच किया गया। आभार ज्ञापन आयोग के सदस्य श्री अनिल कुमार राणा ने किया। इस अवसर पर लोक सेवा आयोग के समस्त अधिकारी और कार्मिक उपस्थित रहे।

बालस्वरूप राही का 90वाँ जन्मोत्सव बना काव्योत्सव

नई दिल्ली। द्वारका स्थित क्रिएटिव अनलॉक सभागार में सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं वरिष्ठ कवि बालस्वरूप राही जी के 90वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक गरिमामय एवं आत्मीय समारोह का आयोजन 14मई को किया गया। यह आयोजन कृष्णादित्य परंपरा परिवार तथा अक्षर आंगन मंच के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संयोजन लक्ष्मी शंकर बाजपेयी, ममता किरण, राजेन्द्र निगम राज तथा इंदु राज निगम द्वारा अत्यंत स्नेहपूर्ण एवं सुव्यवस्थित रूप से किया गया। समारोह में देशभर से आए अनेक साहित्यकारों, कवियों, कवयित्रियों एवं साहित्यप्रेमियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। उपस्थित सभी जनों ने राही जी के दीर्घ साहित्यिक योगदान तथा उनके प्रेरणादायी व्यक्तित्व को नमन करते हुए उन्हें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित कीं।

इस विशेष अवसर पर राही जी ने अपनी अनेक चर्चित रचनाओं का सस्वर पाठ किया। उनकी सहज शैली, गहन संवेदनाओं और प्रभावशाली अभिव्यक्ति ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। और यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा साहित्यकार उम्र से नहीं, बल्कि अपनी संवेदनशीलता और सृजनशीलता से पहचाना जाता है। कार्यक्रम का शुभारंभ ममता किरण

द्वारा मधुर स्वर में प्रस्तुत माँ सरस्वती की वंदना से हुआ। तत्पश्चात् पारंपरिक रूप से राही जी को तिलक लगाकर एवं आरती कर के उनका जन्मदिवस मनाया गया। समारोह के दौरान एक अत्यंत भावुक क्षण तब आया जब राही जी की सुपुत्री गरिमा ने अपने माता-पिता से जुड़े प्रेरणादायी संस्मरण साझा किए। उन्होंने अपने माता-पिता की प्रेमकथा को कविता के माध्यम से जिस भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया, उसने पूरे सभागार को भावुक कर दिया। उनके शब्दों में पारिवारिक स्नेह, संघर्ष और सम्मान की सुंदर झलक दिखाई दी। इस अवसर पर राही जी के स्नेहियों, साहित्यकार मित्रों एवं शुभचिंतकों ने उन्हें सम्मानित करते हुए शुभकामनाएँ अर्पित कीं। कई कवियों एवं कवयित्रियों ने भी राही जी की रचनाओं का पाठ कर उनके साहित्यिक अवदान को आदरपूर्वक स्मरण किया। समारोह का समापन केक काटकर, सामूहिक छायाचित्रों तथा स्वादिष्ट जलपान के साथ हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

यह आयोजन केवल एक जन्मदिवस समारोह नहीं, बल्कि साहित्य, संस्कार, आत्मीयता और पीढ़ियों के मध्य सृजनात्मक संवाद का सुंदर उत्सव बन गया, जिसकी स्मृतियाँ लंबे समय तक सभी के मन में बनी रहेंगी।

नवोदित प्रवाह

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक **रजनीश कुमार त्रिवेदी** के लिए अभिप्रेरणा प्रिंटर्स, बंजारावाला (कारगी), देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं 42 इन्दर रोड, डालनवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड से प्रकाशित।

सम्पादक: रजनीश कुमार त्रिवेदी

नोट: समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र देहरादून मान्य होगा।

(प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक की उनसे सहमत हो, यह जरूरी नहीं है।)

मो: 8923170707
e-mail.- navodit.swar@gmail.com
navoditpravah@gmail.com